## भागवत ए. एस. नंजप्पा

### अकादेमी पुरस्कारः अन्य प्रमुख नाट्य परम्पराएँ (यक्षगान)

## BHAGAWAT A. S. NANJAPPA

### Akademi Award: Other Major Traditions of Theatre - Yakshagana

Born on 23 November 1937 in Araluguppe, Tumkur, Shri Bhagawat A.S. Nanjappa started his career in the Moodalapaya School of Yakshagana at the tender age of 7 years. He has learnt under the tutelage of Bhagawat Siddalingappa and Kalmane Shantaveerappa.

He was born in a family where his uncles, cousins and other elders used to play parts in Yakshagana. Having absorbed the art from his elders, Shri Nanjappa became proficient in performance of both male and female characters and also became an accomplished Bhagawat (singer). He has been the leading Bhagawat and head of Sri Kalleshwar Swamy Yakshagana Mandali since 1964. Shri Nanjappa has made a major contribution in the preservation and revival of this art form by organizing seminars and workshops on Moodalapaya in collaboration with the Karnataka Janapada Academy and the Yakshagana Academy; and by conducting training in many schools and villages, and arranging performances of Moodalapaya. He is also credited with identifying and recording the *raga* and *tala* of the Moodalapaya Yakshagana songs. His efforts have been widely acknowledged. An agriculturist by profession, Shri Nanjappa is known in all the nearby villages as a carpenter and mason. He has so far built nearly 250 carts.

Shri Bhagawat A.S. Nanjappa has been felicitated by a number of institutions such as Karnataka Janapada Academy Award, Janapadashree, Lokasiri awards and several others. He has been a recipient of the Karnataka State Rajyotsava Award.

Shri Bhagawat A.S. Nanjappa receives the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2018 for his contribution to Indian theatre as a Yakshagana artist.

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018

तुमकुर के अरालुगुप्पे में 23 नवंबर 1937 को जन्मे श्री भागवत ए. एस. नंजप्पा के कला-जीवन का प्रारम्भ मूडलपाया यक्षगान विद्यालय में नामांकन के साथ ही हो गया था, तब आपकी आयु महज 7 वर्ष थी। आपने भागवत सिद्दलिंगप्पा और कलमने शांतावीरप्पा के संरक्षण में यक्षगान का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

श्री नंजप्पा का जिस परिवार में जन्म हुआ था, वह यक्षगान कलाकारों का परिवार था। आपके चाचा, चचेरे भाई और अन्य बड़े सदस्य यक्षगान में अभिनय किया करते थे। अपने बड़ों से कला को आत्मसात् करने के बाद, श्री नंजप्पा पुरुष और स्त्री–दोनों चरित्रों के निर्वाह में कुशल होने के साथ ही एक कुशल भागवत (गायक) भी बने। आप सन् 1964 से अग्रणी भागवत और श्री कल्लेश्वर स्वामी यक्षगान मंडली के प्रमुख रहे हैं। श्री नंजप्पा ने कर्नाटक जनपद एकेडमी और यक्षगान एकेडमी के सहयोग से मूडलपाया पर संगोष्ठी और कार्यशालाओं के आयोजन, स्कूलों और गांवों में प्रशिक्षण कार्यक्रम, और मूडलपाया के प्रदर्शन की व्यवस्था आदि के माध्यम से इस कला रूप के संरक्षण और पुनरुद्धार में बड़ा योगदान दिया है। मूडलपाया यक्षगान गीतों के राग और ताल के अभिनिर्धारण और रिकॉर्डिंग का श्रेय भी आपको दिया जाता है। आपके प्रयासों को व्यापक स्वीकृति मिली है। पेशे से कृषक श्री नंजप्पा को आसपास के सभी गांवों में बढ़ई और राजमिस्त्री के रूप में जाना जाता है। आप अब तक करीब 250 गाड़ियाँ बना चुके हैं।

श्री भागवत ए. एस. नंजप्पा को विभिन्न संस्थानों द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है, यथा कर्नाटक जनपद एकेडमी पुरस्कार, जनपदश्री, लोकसिरी पुरस्कार आदि। आप कर्नाटक राज्य राज्योत्सव पुरस्कार के प्राप्तकर्ता भी रहे हैं।

भारतीय रंगमंच के क्षेत्र में एक यक्षगान कलाकार के रूप में योगदान के लिए श्री ए. एस. नंजप्पा को वर्ष 2018 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018